

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH321

रुडे नमो जहै ग्याय ॥ वद धर्म सै चक ॥ त्रिपल्ला उमरु मी उ वल्ला सदा सा ४
 वच मीरु छी के वल्ला स ॥ ॥ त्रिपल्ला जल्ला स वा द ॥ यत्र मछ जव द धर्म
 सै च ग ल्ला जही नमस्का जया दा व ॥ महा के वल्ला वन रु या द वा द ॥ मीरु छी
 या ॥ समरु ॥ यि ना प या ता ४ ॥ ॥ सीसा प्राधि म हा या ॥ निमछन सर्व त्री नः १
 व ॥ गा जयि वानि मा ना थ ॥ दहा य स क र्थ म न ४ ॥ ॥ र हा व न प ज न ४
 हा द य क र्थ ॥ ह क र्थ ना व न ॥ ह मीरु छी ध क ॥ सीसा ज हा दा ॥ महा सम ड स ४

रुमरु छी ॥ द द विज्ञा रु न ॥ वा क्त व या ॥ रु गि या ॥ वे द्य या ॥ थ स ग या स स्का ॥
 क र्म क्ति या या य मा ॥ वा ज्ञा न ग य आ दि नी मा ॥ छ ड रु गी म मा ॥ विधि थ क
 र्म क्ति या मा ॥ ॥ रु प र्थ पि रु द वा नी ॥ विधि य जालु का ज य ॥ वा धि स ४
 रु प र्थ रु ॥ समा धि रु य रा व ना ॥ ॥ वा धि स ल ठा ल रु व न ग या व ॥ त्रिः
 समा धि या ठा या य ॥ पि रु लो क ॥ रु क्ति या य ॥ समरु विधि वि धा न थ क र्म या
 य ॥ ॥ क ल णा ॥ ज न ग ग ण व ॥ य ज य दि धि प र्थ क ॥ काल रु ला रु ती धाः

नी यव सूर्य चित्तिले दधिक्रीडाय गायेव अर्धद्वीपकीर्तिने न
 वीहाय वनेछा नवागर्धपसङ्गतं ॥ ॥ धनामकाताथा अनयासनः
 विधियादहय कलहापूजा लभसाकासपूजा हनी गायेआक्रम वयत्र
 चवा गेकु उका हायमत्र साधयी लभयेत् लगीर्थया लेख धपतागया २
 अर्धयाय समसुपायनाहायाय अर्थनः ॥ ॥ नवागदीरुन्माहा सी
 उरुकागमानवे कुदयमुतगानाति छानागातावपूर्वकैः ॥ ॥ हायीवसः

वाढ छुछुगीवित्रडनर्हि छुदियायअर्थन उरुकायायअर्थन आचार्यनथ
 थागावनायाय धनेगीनायी कुदनया य छुनागाकेयधगावपूर्वकसयाः
 वः ॥ ॥ तथागागीयन्वगावगन्वगावमिदैरुगाग गाथागागानि स्वगावः
 निहगावमिदैरुगाग ॥ ॥ हाथाधाउसा समसुसीसाउस छुछुगीस्वगावः
 रुय डाव्वगीस्वगावैरुगागीसाउराउपाव गाव अगाव गावनापाव नायीः
 कुदनयायः ॥ ॥ मधविधयसी छेव सुतिवीत्रयागथेवव १० न्याहायः

दाक्षैव स्वस्तिवाचकपर्वकः॥

॥ धनं जी महावक्रन पलितानि ६४

धात्रधीपाथयाय स्वस्तिवाचकया अदिनेपाथयाय धात्रधीपाथयाय स्वस्तिवाचकः॥

॥ गन्धर्वसाप्रदानं मेघलासाहवक्रयत नालि कुंद कृतापथः

यथासागरक नदाः॥

॥ धृथ धनजीमाप्रक्रयकं दोनकर्मयाय मेघाः

वाद्यथायकं नात्रि कुंदया दावाप्रस ज्वलाया मावात्राशसीया धनपत्राकर्मनायायमाप्रः॥

॥ सगका नयकवीत प्रजासत्कर्मकाप्रयत् अतिषकं

स्त्री धीचापकमादधः॥

॥ अनिके वाक्कृदायात हासधाय क्रुतियाताः

वर्मधाय तागुपधाय मिसाजनयाश्रुत्सीथथा कमने मित्रनयाः

नामसकको वाव दीर्घाक्रुपचाया व नामसुय हादयाथथा दीर्घचायायः

॥ ॥ दीर्घाक्रुपनुनायीनी मेघलाथीसमन्विता मासुयच्चरुथवा वालः

कादहायद्वि॥ अनयाहनमष्टवा माससत्त्वस्येथवा धात्रधीकरपः

प्रसूत्य हास्मादिहिलिकर्मके॥

॥ धनजीस्ववाद्यकाव पित्राद

वायकि

सुदधान अनका

यकाव श्रवायक सूर्यदेवकपयक॥ धनीजीजनकयाय अनपाठनयाः
उके द्रुसयादयकाव योयास अनपासनकर्म धात्रदीपथि दूवन
नयाव सादूया आराय जलकाय रिछा वसु वा धर्षिवसु नयाव मा
यादयाके छणुपिवसु माचानकाया डाद्युजीवसु नकर्म वापायविय॥
॥ ॥ रायुथमवाल सचवकर्मजीवगि वृजकर्मकर्तृहृदयथाः
सैव्यवक गुप्तदक्रियवेद्य डादीवराथेवच हाहासकमपषः

3

वायनयाकोनातिग रिक्का
पिदपाउ कृतिपादाने रोय
छिदयापने अनिदिय॥

याके डपशमयाकक थर्षिस्त्रिक्रयाग वजदीछादिपे हासकर्मयाय सम
रुकर्मयासर्वधिकायरुया थपनिनकस वजावायपदविय महायानसगुज
दिनेपा० मलुलदहादयावके॥ ॥ रात्रनेदादहावर्ष यमानियममेव॥
व गुयानीमपि वरुनी येवकादहाभाउहा॥ डपनयनककर्तृवी यथाके॥
दहागेगकोछीपीकु दक्रिक्रुदी छावकागीगथेवरा॥ छान्याहाया वासनी
नी गियदधायदीपन॥ सैद्याटिवावपसाटी धर्मउकरात्रनी॥ कृष्टिकाकर्म॥

वयात्रिदं पंचकलानविष्टुदराव वेङ्गापायसुथाद्यैः यस्मात्पात्रमितासक
 ॥ सवतिपत्रमा (धन गथा कलानविनिर्मितं ॥ ॥ त्रिमनेदा दगनासु ॥ ॥
 मसैतोऊनकं न समसु नमयाचकं थं कृता गथा वा कृदया क्रुतिया वेङ्गया
 सुडया त्रिमषदस कमन कर्मक्रियायाय थथाधक दहातनुसुद्रासीत ॥ ॥ १०
 वाकृदयाशया कृनाविय रिक्कयाशयसा पिठुपागु क्रित्रीसया क्रुगीयाश
 य वायानतय वेङ्गयाशयसी डथी छाडयाशयसा कृमीकवियशाकथनीः

कादयिय त्रिददय त्रिमषदनका ॥ सीत्तासियाशयसा मलुवियाव थाठाधय
 यपाव थियदधययपा ॥ रिक्कयाशयसा जीवयनकयाय धर्मधरुतयाव ॥
 क्रिपिद्रीगीका कृधाय पिठुपागु पंचकलानयाविष्टुदियाय वज्रदीलयातलः
 पाय यस्मात्पात्रमिताया आसकसाय सीवर्तिससुपत्रमाथसल ॥ ॥ दलाकयल
 लाक सय ॥ ॥ ॥ वल्लुनीमगुगावर्द्ध दादधमर्कसमपरा ॥ ॥ तलाक वापिनि ॥
 वद्ध वेदवेदसदाशव ॥ ॥ वाकृदयाशयवेङ्गय छाड थपाया डसम ॥ ॥

आतवेन्द, गणितवेन्द धायसा त्रिमन्त्रसूर्याया गत्र भय, लक्ष्मणाय गत्र सवाय
 पय, थथिन्त्रवेन्द धाय ॥ ॥ वृत्तिपुत्रका गुहनविधिदिशिय पटल ॥ ॥

साकवेद्याय आतवेन्द, असनाय पत्राय ॥ पुत्रका गुहनविधि ४ पुनः वृत्तवज्र ४
 धृत् ४ ॥ ॥ आकाशनाथाय, आकाशनाथाय, कृष्णाय, असनाय, असनाय ॥ ॥
 नैकाद, पुत्रकाया सुनैरिन्द्राय, डानीविजयदीर्घाय, वजाचार्य धाय ॥ ॥
 ॥ ॥ लोकाचार्य पुत्रकाय, सत्तानीवदिनाय च, यनसिचय नैरिन्द्राय, उकिमकि

॥

वाक्कक्षत्रिय, वेद्य, डानीय गत्रे वच, नदीदेवालयल्लेख, आकाशनाथ ४
 मिष, ननुदयसूरिका गत्र, विष्णोवात्सर्गकर्मस, आकाशनाथसूर्य, यथिन्द्र
 क्षममद्युय ॥ नकर्त्तव्याय सन, पृथीपासवकर्मके ४ ॥ ॥ वाकायथास, थः
 थिश्थायस कायमगेव, आकाशनाथस, माकास, मद्युयस, थथिन्द्रायस, दी ४
 साकाशनाथमगेव, साकाशनाथस, देवलययाथयस, वेद्ययाथयस, थथिन्द्रायस, रमिस
 दिक्षावात्सर्गमगेव ॥ ॥ यस्मिन्नास्ति पुत्रकृष्ण, रुद्रिजागुवटाकेके, अणामाः

कनकदं वंश, छद्मिया दन धावने ॥ न करु वा रक्षा लाष्ट, मष्ट कौलि रिक्त थापः
 अशा वंदन काष्टनी, यगु गधुषके ४ छुवि ॥ सुलो ४ से ला प्रय हूमि, जीव वै छिप
 साव दंग, उष्म ना रि मरुता मोनि, मल मगु विव रूथ रू ॥ ॥ दनी यरु सग्य
 प्रकसि, इद्र हाव श प्रसी, रुय प्रसि, अपसि, ड प्रसि, अर्कसि, अपामा छे, कद
 वकसि, धधि छु प्रसि न, वा वाय, माय न म रं व, चान म रं व, या हा नि न वाय
 म रं व, घा हा आ स न या दा व, दि हा ची न माय हा, ठा न पा या व, वृ हा न ख

१२

४, ३ प्र साने न द न प्र ॥ ॥ आव ध ना, छु चिया य या प रि मा न थ (थ, थः
 व हा प्री प्र स, छु छु प्री दा प्र द व, थ इ वा प्र, अप पि ग न, अ छु प्री या दा प्री द ४ः
 अप वि ग न लि फ प्र पा व प्री द, थ ६ नि मि रि न सान या य माय, सान या य, री
 व ध द प ध, स म सु ए का प्र नी, सान या य माय ॥ क पी ल ख न सान या य, डान या
 म क न सान ना न या य, डान प्री धा म सान ना या य, ३ ल दान या य ॥ ॥ अः
 स मा फ र्ग र्ग हा या व रू म पी ठ वा न वा स र्क, यी उ य नि य द क्क ना, रू स साने व

सिद्धसिद्धि मा नमः

73

श्रीगणेशाय नमः

[illegible]

वादाव, वाचिस, उचिस, अविपपिगयाय॥ कियकर्मसा उक्क, विधानथीया
यमा २४॥ ॥ २४४ ॥ अष्टकमासि, जामनापनयादिके, एथमे सस्कृतां ४

गर्ह, सुयानौमयि यानी ४॥ ॥ वाङ्मलया, क्रुगिया, वेङ्गया, धरुङ्गः

जागया मिसा ना सठा रु स द सु नी षड्गु या कर्म षड्गु या कर्म आड्गु या कर्मः

साथ उपजा आदिने, सताष्टा ६० रुकमात्र, थवश्चाकर्माया वावहायः

॥ गणेशाय नमः ॥ सर्वेष्वङ्गसंस्तुताय नमः ॥ नमः ॥

नाम ह्ययं रूपात्, ज्ञात कर्मसु का प्रयत्नमध्यासादिके कार्य, यत्तु के अकि या वि
धिः॥ ॥ अथ च स सुखादयावप्युक्तं ज्ञातं ज्ञा, यत्तु च स सत्का प्रयाये ज्ञातः

कर्मयाय, मधुगानयाय, नामकनया, पत्रण, वैद्यपूजायाय, आत्माछेद या ४

ममात्रकैनात्मवाय, श्रीवैष्णवादिनिष्ठदयाय, सरोवधक, पञ्चांग, मलय, ७

चाक्षिप्रयायस, चतुप्रशय, द्रुपाद्रास्यगोथी, विधिविधानथी, चप्रलय, निरु

कर्मयाय धृष्टस्य तत्कर्मदीधृजप्रणश॥ हनो ठाहनहये ठमचखाय ठमखा

पाजति
रुद्रसंज्ञासिमायादिन

सी निस्काप्रमशवः॥

॥ निष्कादीवतु लेखेव चतुप्रमुक्तसिक्कनेतथा नि

कायावर्धु रोदन काप्रयहाजराजनी॥ असीयका न्नपानक सावयकषणः
लक्ष्मी गोजनीकधरीतीती तुलीलाममानातकदी॥ ॥ ज्ञातोया तः
प्रस गिकादीवायाव ज्ञातोदय वक्षज्ञागया साकवायावगयज्ञया क्र
तियगा यंकयादावयायज्ञा वक्षज्ञातियगा छेदयगा लावनकः
हाय॥ धनुलिपिकालन रोज्ञा छेधनयादावगय रोज्ञा वपनथिसीवि

१९

यजनप्रसा लामसी नवमुया रावः॥

॥ वलिव लपहायक अयमनायरात

यनः॥ पीचपटकेण दीयाग अधमसापाननेतः॥

॥ धनलि वलिविय नासि

य वलिपकादायवराय धनजसासीताषयाय॥

॥ चवनुतोत्रयतिरु॥

छामनयक गेवच मनुक्षवपदीक ला तात्रय नूदमानसा॥ वजाचार्यननिता॥

ननुहनक वलेपीयके॥ यथामा मतामल गोपी दितायी लामा रतार्थदी अतिथिहो॥
रगायक चतुर्थवलिकर्मके क्षामानु तोत्रयवक्ष वायपीचपुणीनना अनामिका

पञ्चांगि सध्यामापानमवय समानागर्ह नारुया कनिष्ठापानवायव ॥ वा न ४
 वायव्यरुक्त पञ्चांगिगतागतासर्क ॥ ॥ रिद्रुपनिमै भुल्लिखे धन रा ४
 नयाय ह्यामनेत्रकयाथथ वजाचार्ययाथथ मकुनतोका ॥ धनयाय पे
 चवलिविय दूणीअम गारन सेतोषनयाय ॥ धामातासेतोषयाय अतिसेतो
 षयाय वलिकर्मादि कथने डानीपीक वायसीतोषयाय पानवायसीतोष ४
 याय अनामिकानपानवायव सध्यामापानमवय समानावाय चाजा

नसेतोषयाय डदानवाय चाजा नसेतोषयाय वा नावाय का जानसेतोष ४ ॥
 याय थथान पञ्चांगिगतागतासर्क ॥ ॥ समदायील्लिखेः
 क पुन ४ दहावायपूतोषने छिजासूषयदारुंकी मयदाका नतथेवया वहिजा
 नूतथाकउक्ष डगूक टासनहास्यक वर्जयतु ताजनकुची ४ ॥ ॥ दापविदे
 वमूनकावयायारुल दहावायसीतोषयाय अर्थन नयावाउस मालस कणाः
 उहा जाहागदिवकमतव पावनश वायाव यनन वामथियकेनयमतव ४ ॥

पा० नपि वन जाहात गयाव नयम गेव दने उतिक गेम गेव दग गरी के जा
 व नयम गेव थ (था मया सी नउसा छुवि ४॥ थ (था या गसा असुवि ४॥ ॥ यमा ४
 सुमास ड वा सी क नदि गी विक गो नन ४॥ पीग (ठा पन ४ पा नी मरका सुषु नि व र्जय
 ग ४॥ ॥ दक्रि नरु सुयम गेव र्का उ स न का व वप न थिया वि झा या छु लिन २१
 यम गेव ४॥ ॥ सा व द्या नी र व द्य सु सु व र्क्ष द न व र्क्ष क ड प वा सा वि गो र लो
 धान जा पे व छु द्य गि ४॥ ॥ हो रु न या व उ स थ व र्जा रिया के न म व र्जा ग या के

वप ल्पि थि पि रु उ सा ड पा स न वा ने मा उ जा प धा न न छु वि रु यी व अ हा ला गुः
 क्रि उ मा न ४॥ ॥ ठा छु या सुषु पि छु न र प ग पि र द व ग ग सा इ सि ष दा ग व
 (ठा पा न र ग ४ गु म न ४॥ या व इ सि ष (ठा व लु प छु नु क्रा उ न म री ग गो क र्था छुः
 वि र्क्षि री सा प वि (ठा ध य ग र ग ४॥ स ग न क री प (ठा प छु म ग छु व दी ध म री गु दै ४
 ॥ ॥ हो रु न या व ल स क्थ यो य ना सि य क्थ यो याने स म स प ग लो क पि
 ह द व गा री गो ष रु य व थ ० न क्थ यो य मा उ न या छु लि अ न ल न के मा उ रु व ४

कैनयमगव, थपेदुलिन, समस्तुनगनसै गोशुयीव॥ यनकावगया तुलिसः
 सिय, मूथुवाय, डानीलिनिकै नासिय, तुविपविगुयाय, सवित्र (का) धनयाय ॥
 मूथुनआदिने, महाया नसुगपयय, सद्धर्मपाथयाय ॥ ॥ सीध्याया समयप
 छागु, मलुतावनयाय ॥ ॥ सीध्याया समयप ॥ ॥ तुयदेवयः
 दसुगो, रूपसा तुसमाहित ॥ ॥ डरुयचार्कमागक, पछिमसीसुयवध ॥ ॥ सीः
 हठाया समयप, धावदिध्यानगय ॥ ॥ धनीया, सीध्याया अवेयकाशयसा

मलुनरावनायाय, वासाकावादाव, देवताया तुवि, तुयसा तावनायाय, धामनः
 याय, न्याकायाय, तुयदेवया, वयधस, नमस्काययादाव, रूपयाय, सीध्याकायस
 डरुयसासी ज्ञापयाय, वाकाकापछिमसुयासुय, सिद्धगयाववादाथ ॥ ॥ थवद
 व (का) मवसुनेमइरायपीववा नं ॥ ॥ धावदीपयय, सुथइयसा, पूर्वसायाव, वा ॥
 द्विसदक्रिदासुसी, धामनयागयाय ॥ ॥ ॥ वृत्तिगामनिदरागवान्, जीधन
 तावनराविरी, निरुच्ययविधिपगलदिगिय ॥ ॥ ॥ अथमइरीरीगावन

मगदवाचन ॥४॥ ॥ छुरीमयाम्बुली नृस्य ह्यामरुवाहिष्टतामरी ॥ पुमादा ४
 नधयकयि उतनियमनमके ॥ पात्राणि का कथकेषा देहायसुतथाठाग ॥ ॥
 धनैपि पत्रमच्छविमैरुह्या नञ्जुह्लादयकैविश्यागा ॥ दमना नृ देसाकमनि
 केन देनञ्जुह्लादयकैविश्यायमात्र ॥ चापि झा नृपथात्रयावचनधात्रसा चले २२
 पात्रया झूथन महाजमवचन डरुहि श्यावयाद ॥ छविचिनी ॥ छविनीञ्जु
 ह्लातन मस्यसी तामन उत धर्मस मरुमरु थयायव थथ्याश्रयाव ४१

धुलिहिया पत्रमायाय ॥ वाथमात्रधकैदंदा ॥ ॥ रावतानाह ॥ रावतकपत्र ४
 मच्छप्रमन ॥ अह्लादयक ४ ॥ ॥ पुमादानीययकर्म उतनियमनमवच ॥ मा
 सनमुख नपापे दानधर्मापवाहकै ॥ ॥ छवि ॥ अह्लादयकै न उत ध
 र्मायादावात्र ॥ काधतमयातसा करवात्रदयक ४ ॥ उचिता डपासनवा ४
 मात्र उचितायनके दिधे दानयायमात्र ॥ थथ्यादुनि पापमायव ४ ॥ ॥
 निरुक्तमात्रेताव ॥ अथध्यानतथेवच सानदानापवाहन ॥ रिवातुंलहुचिरव

पात्राणि

विष्णुकेसवसुमान्त्या
कामकोधशत्रुममदय

गृह॥ ॥ हनेच्छेदी नित्यकर्मयायत्रममन, ज्ञापयायत्रममानि, ध्यान, गो
गुप्ति ध्यायाय, त्रुमान, यत्थरुपनाव, सुखाय द्रुता, दिर्थमात्र द्रुयमात्र, डण
सैनवान्, दानयाय, धर्मयाय, ज्ञापना गुयायमात्र, श्वरनछुचिरुयव॥ ॥
कामकोधशत्रुममदय, योत्रवयविपयत, स्नान दानादिकेवेव, वधमकनविमः
यत॥ ॥ हने, काम कोध, या दान कर्मत्रममन, शत्रुयापापन योत्रवध
ध्यायानत्रस, वानिव, शत्रुपापनाशयाय, ता, दक्षि, गोत्रुतापवा स्यायमात्रः

२४

निरुहानयायमात्र, दानधर्मयायमात्र, यत्रिनछुचिरुयव॥ ॥ वाचा
उयत्करोपाप, पात्रकेपत्रिकीरुता॥ कायनयत्करो कर्ममहापात्रात्रिका
रवतायत्करोचिरुत्रेपाप, डपपात्रकमूत्रात॥ ॥ छलितोवचननः
यादापापशत्रु, तवधर्मपापधकेधाय॥ ॥ वाचात्रनया दापाप, महापात्रा॥
त्रिक धासीतत्र, चितनया दापापदक, डपपात्रकधकेधसीतत्र॥ ॥
उहायावाचिकेपाप, त्रिपुकात्रकदक्षि, चिरुत्रेचपन॥ छिये, उतपीयसमलेके

२५॥ १५२

वचननयादापाप, पात्राधकधाय, हाजीवननयादापापसुता, विरुननयादापापसुः
 ता, धक्तितापाप, पापदकायाहा॥ ॥ पात्राणि पात्रा अदरुं दा ने काममिथाः
 चकायिके, कायनयलुगीपाप, कायक (हा) प्रमयातं॥ मृषावा दस, पेक्ष, नपा ३४
 सीहि नराधने॥ ॥ अनिवर्द यादापाप, मवयावमु हाया रया दापाप, मवयाः
 विप्रिया के वचनपा, पाप, धते सविचननयादापाप, थव हाजीवन ३४ स्वस्य यावमात्र
 कापाप, रुसखा हायापाप, सुखा वाखा वि, डवचन, थ (थवि) धख, धते वचन

२५

यादापाप, वचनने इरुस्य यावमात्र के व॥ ॥ अविद्या अ वापा दमिथा दृष्टि अ
 विरुं नै मनसा वयलुगीपाप, मनसाय विमया तें॥ ॥ अविद्या अ वापा दमि॥
 था दृष्टि अ विरुं नै॥ मनसा वयलुगीपाप, मनसाय विमया तें॥ ॥ मख विद्यां॥
 मनन के लाना याय, मखा दा, मस्य या, ख दा धक धायापाप, थव मनन, जय ध्यान गो
 गुया दाव, थव मनने, मोचकें॥ ॥ अपविगु अ रवा सर्व, मला रू रू वी हुं ह्यः
 मि, सूर्या नि स हा ना दापि, रू मो ध हा रु ली हुं वि॥ ॥ अपविगु था य ३४

सा मनु ननुदियादा व लेखनहाया वहुचिह्नयव निरायसपादान मिठायादा
 व वसूजागहुचिह्नयव लेखनउसा रूमिसदितना वहुचिधाय॥ ॥ जनि४
 घूदधानस्य (हा) रक्षा धादि घूसा (हा) मया मरुविमार्जन च इधितैव घू४
 न॥ ॥ मगें वहुलिखयान मगें वहुलिथियान नया वहुलिचपीथिया
 न चा निन के कयी लेखनहायान लेखनचायान मालेश के दूयान४ः
 हुविपिपिगुह्यव॥ ॥ आवर्मसार्धनेकार्य विपचसफभवय न दो

२३

वकाययत्त (हा) नवापिचहुचिरवत्॥ ॥ मगें वक्क मगें ववमुथियाया
 रुधाउ सुधाउ दाधाउ द्रसधयनासिदाव हुचिह्नयव च (था) यागदाः
 व दाषनमइसीममाउ॥ ॥ यद्गुविवाहया नाया (ती) था देतालयष
 च दे (हा) विपवसेछाम महाताकच (भा) पूक॥ कामगजा वससु (हा) सुगिकाचः
 उजसया वाधुजाक कुट्टदष्टी महापातकिनेछुनी॥ ना सुविकीस याविः
 मगस्यानूचयपन॥ सखे लस्यानमावय येवठा वनहुद्विगि॥ ॥ दोम

कर्मयादावपि विवादाद्युक्तस्य गोप्यवनेषु गवधददेवपुत्रा, देस
 छदपुत्रनरुवथायस, सेछामस, समकआदिनेगवगवरात्रस, वमथः
 स, कामयादावपि छिककथियास, माचाववमिसा, उरुसयाशवमिः
 सा, येछालज्ञात, रवा, र्वा, पापिस, पत्रुष, रिवा, नाय, यन, सिवायः
 विवगीव, वदयनिधियाया, धनस, मालदूयाव, येछावाकाय, छुचि
 जयव ॥ ध्वनिनाथियमगव ॥ ध, थ, र्वा, सीने, कृतयमदयके, मसिस, थिः

यावसना, स्नानयाय, मनुजकयाद, कर्मयायमात्र, थ, थानगुनिछुचिरु
 यिवः ॥ ॥ वामकेचयद्वच, ती, र्वा, रिषचमे, छामधर्मप्रथायाद
 सर्वप्रज्ञानमाचयत, मासिकियागिजागुद, सगिकायादछाहनि ॥ उरुः
 सदादछाहनामासावेप्रज्ञानमाचयत, पर्ववर्मेपविहाण, छुचिवकुदया
 वरी, सचय, इहप्रदृष्टीस, छ, उदाह, कृत्रमेथन, अजीर्ण, वद्विकार्या
 च, स्नानमवविधियतः ॥ ॥ याणीइय, दामकर्मस, तीर्थज्ञागुसः ॥

दिक्षा कर्मसु शुभसु लक्ष्म कर्मसु यत्थु श्रुतं मग्नवक्त्रधियान् मायश्रु
कद्रुयानेष्मका मासिकश्रुतसा सुखायद्रुनछुवि मायावदवयात्रिमनिः
द्रुनछुवि वाधावता दयात्रिमनिद्रुनछुवि धर्तया मग्नयकधिया मग्न
यकसुयान् कृपायावमुतावताव मायद्रुयाव निगवमुनगियाव छुवि २८
श्रुयीवः॥ यत्थु मग्निकद्रुया मग्नवधियाया धनवय सैरुय लसिः
धन पुषायायस अज्ञानश्रुत साधया धधिदयनिस सकगताकनावः

मायश्रु कद्रुयानछुविः॥ ॥ अछुविः सादयनिनिह्यै सयायामछुविः
यमान्॥ सयनाइधिगासाधि छुविरवनिनिह्यैसः॥ ॥ नक्रतिपयिउसा
सदेदावतागाय नम्रीअछुवि क्रावीकद्रुददावमवताय मिन्ननक्रअछुविः
मिसात्रन जासानददाववनास पुनिछुविरुम्व पयसयाः॥ ॥ दहना
कुदनादापिधपनाकुविः काकने काकनेमनिमकाच पुतालत्रुतास्यः॥
वीरुतायनछुदने काकागासुरसहिः अहिः छुदनेवाहिच वाकासलदयाः

निव॥ काष्ठदिग्ग स्यादानीकपक्षसाधनाकुचि॥ वाहुलाद्यस्य लामस
यादा लज्जयदा॥ पीयूषावापुष्टिद्विष्टागमृगताहुगुवज्रयगृदस्य (होइ च्छक्तिः
गीडवाहतास्य (हो नहु क्षति॥ स्वतावहु दाम सर्व धर्मा स्वतावहु दाने ॥ ॥
मिस्रकाया, कुपनमता कचदा, वासावता वा जान, सर्व धर्म वसुधुचि॥ रुने ॥ २९
ल, नैलजाग, मृति, पत्र, डादा, धर्मता, हीन लेन दाया नहु चि॥ वैद्याः
वसु, क्षिप्र चरता, नचिन वाया नहु चि॥ वाहि, रुले रुले, कथयुत्र, लेख

नहायानहु द, सिनकादा, थाया, जानकादा थाया, लेखनस्य च, निहायस
पादानहु चि॥ जानदा॥ यका थाया, सिनकादा थाया, वीछा लन थिच, पीच
ठाया नहायहु चि॥ था थाया, मत्र थादा रुके, ताचतमाच॥ मने व वसुधुचि
दा व लेखनहायान, हुचि याय, मत्रिवरुता, स्वतावहु दानहु चि याय ॥ १॥
॥ वृत्तिछा॥ का मृनिस्तथा ता राधित, महापात्रादि काया, हुचिः
नियमपटलो, हरिया धाम यसमाफ ॥ ॥ अत्राष्टिकासम्यक्, कर्तु

काविधिनादिता, सेसायाई वमठमनी, निवृत्त्यथसुदेहिनी॥ ॥ अमा
 खना, यत्रलाकवनेयागमकि, सुययाग, विद्याविधिवासीगय, सेसायहाः
 दानसमूहस, यत्रयपावयादया, नत्रकादितामसयत्रयपममात्रकया, विधि
 थ(७४४॥ ॥ य(७५५)केअमिगसुयस, द्वासातयात्रय, अ(७५५)समसुयायनाछा॥
 यायअर्थन, सकयसहयक्रायायनिमिर्हिन, जनह्रायधके, आह्रादगी॥ ॥
 यथा॥ स्वयमवतीर्हृष्टाकीनी, नोकायाकिपयाऊने, डगीर्हृष्टाकिहीनी॥

नीकागोपीठायायसि॥ ॥ आवस्वमाय(७५५)थम(७५५)थम, सेसायसमूहयत्रः
 यायसामर्थरुवक्रया, नामसददाववनेममात्र, थम(७५५)थमयायादाववनेमः
 रुवक्रयाता, नामयात्रयाय, मात्र॥ ॥ ७५५५कीतिप्रपक्ष, वद्धविज्ञानता
 वय, दर्शयस्मत्तुत्रैहनी, लक्ष्मीविविधैषन॥ दयितेयकगथाछुकीतसः
 नीलपंचम४पंचमै, गेविछुद्वन, पंचरुनएकल्ययगा॥ यस्यचिद्रुस्यप्रपनणः
 तितस्यैवयात्रयगुहिक्रुनेर्वातकात्रदीनानकहसैगतिदर्शनी॥ ॥ थवन्

कुने स्वरावने, यूपनवर्धु जातिहावनायाय, छवसिस्त्रेहया, विधिपर्वक
 लरुदासयावा, अथ धातु, असाधसिस्त्रथावातद्विहर्धु, गङ्गा धातु अमिता
 रतथावात प्रकवर्धु, वायु धातु वेलावनतथावात, तोयवर्धु, पृथिवी धातु
 प्रहसंरावतथावात, पीतवर्धु, आकाश धातु, अक्रावसुथावात, नीलवर्धु
 धृवागुली धातुस, इवाहय, वर्धुवर्धु रदन, पञ्चरुतपञ्चरुत, तावनाया
 याय, छवसिस्त्रयाविद्वस्वयूपरुत, डागुपी डागुविगतिस्त्रयायपण्डानि

वृक्षकहि रूपनिस, गतिदर्शनविया ॥ ॥ सैदा प्रकमया (नचुविह) देन
 यात्रयत्, अणफारिषकाद्यमनुयागविवर्जिता, तेषी इर्जनिसै (नध) सखा
 वलानि जात्रयत् ॥ ॥ धनेत्रिसैदा जातिदासकर्मयाय, छविछुदात्माश
 याव, छवसि अरिषकमयाक, यूपसिगताव, मनुकर्मन, ताप्रतुसविय, थ ॥
 थिस्त्र, पनिमिगदाव, इर्जनिसै (नध) मधुल, दर्शनयावक, सखावति ४
 क्रुतसकाय ॥ ॥ जलजासुलजा, सखा, खनायासमजनाव, (नध) यइर्जनः

तिगोषी सेवा (धो) स्थापय नमदाशा तिसमाधि समासि नाम तण पमि (धो) धयत ४॥
 विना समधु ले का आयेव स्था नानिया रुथता ॥ ॥ बलि, लेख सदा य पणः
 लिसकय, बलि थय सदा य उप पालिसकये, बलि आका हा हा य उपा शव दके
 पालिसकय, इर्नगि, मरिद ठा गिता लता का व, सेवा धि स्था न स इ वि व के, तथा
 इविय के धा य सा तिसमाधिया चाया दाव, काय वा क विरु, विधुदिया यति ४
 मिरुिन, पक स्था न स इ दिय ४॥ ॥ सदा या नि समा यय, निमादि गिका

२२

दायुरि, नील व (धो) पवा यित, सदा या नि सुता ययत ॥ तता नि ह य गुमा, लीः
 (धो) वा पि रु व न पि वा ॥ कमधु द क धा या ति ४ (धो) य इ र्नगि सदा ॥ ॥ धने
 लि सदा या नि दाम या य, नि प सि न दाम का य के, समरु हा क डय या य, थ गे क र्म
 धन का व, सिक, थं य न गुम हा रु सी, तीर्थ स रु य सी, मसान स रु य सी, लख धा थ
 या व, इ र्नगि पि वि (धो) धन या य ॥ पण्य नि सी, धि य नि सी, रु य स स्का य या य ४
 थ य स स्का य या य, पि धु दान या य, अ नि स स्का य या य, व य ता ता, धने रु य वा य ४

उक्तमधुगणकदावमवगाय दामकर्मयाय॥ ॥ तस्मै वाचि नमस्वकार्या
 निरुतावस्यपिन समासमसा (८॥) येय स्ववर्धुयुमिगुता मागलिमायी
 मुग गायपुदाययग॥ ॥ अथथपनिस्व थवथवज्ञातयापमानन तेः
 श्वविय छुप्याग देवयता सिकयाग पुतत्रिविविया॥ ॥ आदरु ४ २२
 रुतमनाताला ४ यावद्वष चरुषय नकरु वादकदान प्रियागुंछछुचिरवे
 ग॥ ॥ वाहनिही पिददमनाव थक्कवा लमिगना स्वयापद्रुनछुचिः

रुलदानविमसाय॥ ॥ एछावमयगवाली पिरमागुगिपारुके स्नानः
 मायेय (८॥) गानी (८॥) वषविहाठाग॥ ॥ मोचाव्याव सिय माम
 वव्यास्वयापद्रुता इखनयाने (८॥) यया डकईवानके एछाषया व
 वछायाव विछाषविषन विहायाय॥ ॥ एवजिगाचनयमाकता
 यमियगसति पिछुदानादकादीनी काययदसिहैवय॥ ॥ ४
 वन्देदुदाक्कश्ये छुदयात्रनिकयात्रयसा वाक्कनया रुगीया वेछा

या गोदाननयासु सितासा पिबुदानयाय जलदानयाय अष्टिकाय
 माय॥ ॥ सीपाकथयनयनेव एसा दादकगामतो जलदानसककल
 का पिबुदानविवजिते॥ ॥ थदुणाद्रादाथ गोदाननयासु वेयन
 दासु अनिरविश्यासु सितासा जलदानमाय पिबुदानयायमा॥ ॥ २०
 दादवषसीपक्षु मियनेयवमानवा॥ पिबुदानादकेसर्व काययद
 विद्यायत॥ ॥ छीनीनयपूष तिमनेददयावसियव थयातइसा

पिबुथयमाय जलदानयायमाय॥ ॥ नेवनिवसयसोवी वजा॥
 यार्थतथेवच नकपिबुथदातया सफाहानिविछोषद॥ ॥ निवोव
 दिक्षायाकसु वजायार्थपदयाकसु थथिं सुसितमाव थनिसिताथनिः
 यद पिबुथयकु ववमायुइकु स्वपूयसममाय विकयमाय विछानद्र
 छाद्रनका माय॥ ॥ एतायहनिसेपाफ करुवास्मिसेवय॥ हससा॥
 गीपन कला छोषरसानिवाहयत॥ ॥ थसुपूषसितासा स्वद्रक

सिकयाजीय

द्रु अस्मि काय अस्मि पञ्चायाय नजी पञ्चायाय चक्र रासर्वा ठा स वाय ॥ ४
 ॥ ॥ इति यदि वस मात्रं ये वस फयथा कुमी इ ष्ठीति (ॐ धनं धनं धनं
 मधु ले वरुं यन्माता ॥ नयी पतिष्ठापय दस्मि ये लं ठा रुं वि (ॐ धनं ॥ अस्मिः
 ता रा वस गुरु कृपा थय लून ४ पन ४ ॥ सफा हानि ठा स पाके (ॐ अकर्मनिकाः
 यत् ॥ स्त्राने को ज रा था वसे ता च्छ सै च य वरुं यत् ॥ रा रा ४ प ४ न्य दा रा वी वी
 धा थं पि धु मे क के ॥ स्त्रा व ली या नू यं न रा थ ता ली न रा व ये रा ॥ ॥ ख द्रु

२१

के द्रु द्वा द्रु के द्रु इ ष्ठीति प (ॐ धनं मधु ले पञ्चायाय अस्मि पञ्चा अस्मि ताः
 उनादि अयपिमिता धात्र क्षपा ० ॥ द्रु स द्रु के द्रु इ ख वा न के लसि धाने ४
 मात्र द्रु य निठा वसु नतिय पि धु दान याय सै च ता च्छ न के सम्यक् वे वा ४
 धि स्त्रान याय अथ नरु ठा उ पि धु थय रा थ ता ली न रा व या के न ली न पि धु याः
 य ४ ॥ ॥ उं मनी श म हा मनी खा दा ॥ ॥ उं न म ४ सर्व इ ष्ठीति प विः
 (ॐ धनं चात्रा य रा था ठा ता या द ते सम्यक् वे वा धि त था दै य वि धा म दे ॥ ॥

वे अयपि रे वे या पि धु य

धमन्तु यथावत् लीनयाय ॥ ॥ हुममन्त्र करिद्रया जघकार्यः ४ः
 विधाय तं खलकापाठाकानीच एवैककर्म एवैक क्रिया ॥ ॥ हुम
 मन्त्र करिद्रया इवैकथथाक्रिया खलकरिद्रया उपाठाकरिद्रया
 यागात्रयागात्रकर्म यागात्रक्रिया ४ ॥ ॥ पिबुदानादिके लोमैः ४
 अथैवमपि विष्ठासतश्च धमदिवसमात्रायावत्सप्तदिनैश्च ॥ ॥
 पिबुदानयाय छविपवित्रयाय यच्छलिनागया इथी नकठाशतकद्र

२३

निष्पेद्रसद्रुता पिबुकर्मयाय ॥ ॥ पिबुदानेयथाकार्य छुदासाचः
 क्रिगद्विधेय यथामदितियहतीयष एवैकैवयदाययत ॥ गत्येवदिचतु
 थपैचम गुनिद्यागय एवसप्तविष्ठाद्वर्थ सर्वइर्जतिक्वदने ॥ वाधाठा
 सप्तधाम्भुक्त जायतपीचमहनि सप्तमैकतथापिबु सप्तमदयपिबुकैः ४ः
 ॥ ॥ ॥ द्रुपाशुद्रु निद्रुकद्रु सद्रुकद्रु सुव्वचसुव्वचपिबुथय थथा
 यद्रुकद्रु दाद्रुकद्रु सुव्वचसुव्वचथय साकमूनिताथागागविबुद्विधा

पञ्चमः
२८
॥ २८ ॥

यन्निमिर्हिन इठ्ठनि वनसमात्रकं अथन सफ धातुसं ड हर्हि इत हात्रप
पद्म के द्दुचु वप वि ह थय, द्दुस द्दु क् द्दु नं वप थय ॥ ॥ स ल व र स म ४
धर्मो न्द्रा काये प ला स यत्, स व वा द्दो प न ल्दे व, वा धि वा ज्ञा म तं ह ४ पः
वि वा म न स य ति ह ॥ पा ग य र्हि न मि नि धो ४ ॥ ॥ स ल व र स म ४
मा तु व, थ पि ह ४ इ य अ र्थ न, ध र्म वा य अ र्थ न, प द्म स जी व इ य अ र्थ न ४
थ पि ह ४ क र्मा या य, ग थ णा ग या, अ ठा फा णा स, पि ह ४ या य ४ ॥ ॥ स फ र

२८

था णा ग ली ने, ली न पि ह ४ पु दा प यत् ॥ प न ४ सै व र्हि स ल व न, ल म वि वा हा दि के र वः
॥ ॥ स फ र था णा ग या कं ली न या दा व, प न र स म स मा त्र कं या नि मि र्हि न, ल म ४
ठा स प र्जा या य वि धा न थ ॥ ॥ अ थ वा म नु वि र्ज न, स धि न्द्रा य न वि न यत् ४ १
अ र्था वा स्या सि क म्मा य, प न पि ह ४ व रु द्द णा ४ ॥ पि ता प र्त्त प न ४ व ४, वि क य दा स द व
४, य ली न स क य न्द्रा म क्, पि ग पि मा ग वि य थ ॥ ॥ म नु या वी र य क थ, स धिः
या य, क र्मा या य, थ (थ) म स प र सा, थ (थ) म रु ट सा, उ ठु द र्हा पि ह ४ थ य, पि ह ४ ला कः

पात्राणि

अथ यथा इति वचनम्

पञ्चपिण्डविक्रयनये क्रिमदाष्टत्र माहयक्रु पिरुयक्रु इयसा लीनयायमा ४
३४कथने ४॥ ॥ पिना पिनामदादीना माता मातामदायथा जसातिताय

२४ कथने ॥ ॥ पिना, पिनमहादीना, माता, मातामहोयथा, असाहिताव
यथा न ते याग, यथा गेन था गेन था नागाया हे, थगेन के प उपाव, ली न या य ॥

॥ ॥ दक्षामपि धुमिरुके पुनश्च सर्ववर्षकं न काश्चित् दक्षामहं न क्रिय
साञ्जिरावात् वेद्यानी दा दक्षामहं न दिने कविं गतिं दके सगकं न के
वापि लोभकं सगदिधीयत ॥ ॥ यत्तुर्वर्षकं नित्यं दक्षामपि धुमिरुके

५८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

गन्धर्वपिबुधसहितः क्रिमचुक्रनष्टरीशयीव क्रुणियाक्रिममिद्रनष्टरीसि वे
 ष्यक्रानिया नियचुक्रनष्टरी ष्ट दक्रानिया थथा थवश्क्रानया सितसीः
 वायसी ष्ट्रियाय थथा वाक्कलयाक्रिद्र क्रुणियाक्रिमचुक्र वेष्ट्रक्रानियाः
 क्रिमनिद्र ष्ट्रियाय नियचुक्र थथा नष्टरीशयीव ॥ ॥ दक्षकयमताः

विष्णुगिरिपातुं सज्जितं वरुणं । यस्तु विवर्तते धर्मो च । सीमासु तत्कृत्वा तु विष्णुः ॥
दक्षिणमुपसिक्तं कृत्वा । एतच्छास्त्रं न तु विदुः । यस्तु कर्मणा दायादसु धर्मः ॥

दानयादावपस विवाहाकर्मस सेनासहसकाय थथ्यश्रुवनसितासा ४
गलाकावदीधुवि ४॥ ॥ मरुहो न राव न म त द वा र ग ॥ जी व नि उ
पितायसा मय नं व यदि स ग ४ सी ली न क य (ह) ग सा ग सा ह म हं ल यै क ४ ॥
॥ ॥ य ३ म ४ ३ म रू ह्री न सा क म नि य क ळ ना प या ग ठ व स्र या ४ ॥ २९
व र सा दा व रा य का य धी य व थ स्र या ग ह म ह य य ली न या य ठान
ध के आ दे हा द री ॥ ॥ थ न ह म क म नि ग थ ठान न आ हा द य क यै ४

ठ व स्र यौ व र या व व अज्ञा धाय उपिता धाय अज्ञा या व व क थ नै व ह ४
ध म्मा सै य ध के थ प नि स्त स प न ध के ग ति वि य ली न या य ४ ॥ ॥ अः
थ सा म्य गै ह म हं पि धु ॥ ॥ ली न पि धु या द्वा य ध नो ॥ आ व ह्री हं पि धु या
द्व द्वा य ४ ॥ ॥ ली ना र्क यै स मा य ४ नि ह नै मि र्कि के ह दे गी थ दे वा ल य ४
सर्वे ह म हं पि धु य स सा गै ४ ॥ ॥ नि ह्ये ह म हं धाय दि शं थ य ठु लि नि मि र्कि
क धाय का र्थ का य द य द नै प र्व त प र्व या य अ मा व सि सै जी नि य नि सि ४

होदका अष्टमि श्रुतपर्वस हार्दयाय हनी गिथिप्रादाव सिक्कप्रीदिन
 सतिथिवदाव देवयाथानस थर्षिष्ठथायस हार्दयाय एमिदयायव ॥
 रूद्राताकादिकेसर्व उवाकसितवडिगी संयुक्तनिर्मलं हृदं स्थापयत्सु ॥
 मादिता ॥ ॥ ह्वस्तपयवन हार्दयायस रूद्राताकादि तिनके वाता ॥
 याव महिद भुवि गोपताव हृदयस निमज्जुदा साशयाव हृदहमिसः
 याय ॥ ॥ पूर्व घृता नाना नैव आर्यादिके निमज्जुयत् ॥ प्रकृतयस्तु यथा

४०

दो पञ्चादायमप्यर्चयत् ॥ ॥ रुद्रमानन दूथकूट यथादिताया नयधून ॥
 काव निमज्जनयाय नयमयावय निमज्जनयागवयसा जीथानयमगया थाम
 थथर्षि उगिथिय नोसियलाहाथसिय हृदिष्ठा लयाय ॥ ॥ स्थापयित्वाः
 भुप्ररूपा हृदिष्ठा नैव विस्तृतं तस्मिन् पाद्यावसने दत्वा हार्दहमोनियायत्
 ॥ ॥ हृदिपवित्रहमिस हार्दकर्मयाय थर्षिदथायस रूकियाय हार्द
 हयाय आदय पूर्वकन क्रूरवण पिरहाकयागपाद्यावनादिविया ॥

यदापि शास्त्रमनुरागं मनुमन्त्राय गच्छेत् नित्यं सर्वकर्मणि रावडाकर्मः
छादकं ॥ ॥ उत्तिष्ठिदाथाय नानिदाथाय स जाहाथसिदाथाय स रावडा
पञ्चाङ्गिगन छादकर्मयोगसा छलियात डालिकर्मनित्यं यव याका
वसु जाकर्मनकाय ॥ ॥ सैयमाद्युद्धुदासा त्रिगंन्दीयमोनसुवतिः
मिजाहाल्यसैरुष्ठा क्रियावान्छुचिक्रय ॥ ॥ माहाननि द्वादासासमा
वर्कमानसवाक छुदियत्रयत्रय मवयावसुसयारम इ विहायनीसैरा

प क्रियावक्तृ महाविचक्रव क्रमावक्तु छुचि थथिं स छादकर्मसंयुयाय
॥ ॥ स एव छुपूछा द्वादासायत्र स समादिता ४ रावडा द्वादासायत्र स
यपित्तोहाता ॥ ॥ थथिं स छुपूछा द्वादासायत्र स पतयाय सकयपित्त
याक सैतायत्रयाव स र्जल्लोकसवास्यायव ॥ ॥ इषासाववत्रय ४
वकासिकत्रययाय ४ असैरुष्ठा छुचिक्रय स एव छुपूछा द्वादासायत्र स
साववत्रय ४ वकासिकत्रययाय ४ असैरुष्ठा छुचिक्रय स एव छुपूछा द्वादासायत्र स

गु॥ ॥ इष्टात्मा वचननाययव अपावनयव कवीकवीठावथव ४१
 सीतापमरुव छविमरुव थथिस्तुपूतावगेंमाव ४॥ ॥ निजासापित ४
 प्रयाति दातावानलवउता ॥ अयसीमसयदा ॥ अर्द्धपापुंरुवत्रयता ॥ ॥
 थथिस्तु आचार्यन अर्द्धयात्रे ॥ पितापुत्राकनिजासायादाववने ॥ अत्रेमा
 न नत्रकवनिव थपिदुथययाग थाजानथाजामगेंव सिथाजामगेंव साः
 नञ्जादाथाजामगेंव ॥ ॥ एमादादीयगेंयग दहाकि लिखरावें ४१ ४

४२

मध्यागुपुत्रकुल ठाठागुससमनिगी ॥ उक्ताली दीपसहिष्ठी ॥ परयत्रकमवध
 यथापनिवुगीयेव ॥ वरुणधरुवत्रयता ॥ मल्लिकालमातापुष्पा दृष्टागुष्पानिद
 वता ४ नयानिपिततागुष्पा ॥ ठिकयाज्जतथेवरा ॥ ॥ मगेंव धाक्यदाथः
 कृतपमदयके कर्मयागसा ॥ सससुजापनपदावनिव ॥ धर्मधागुदकादाः
 व ॥ ठागुस ॥ मगसहिगयादाव ॥ परायाय विवरुनिमन ॥ ठा ॥ थ ॥ अष्टमा ४
 वतायादाथी ॥ गाय डयवावन ॥ कर्मयाय नानावर्क ॥ नानाखानमगेंव ॥ नसाक

धाकृत्स्नानमगंव विष्ठावक्ष सल्लिखान माल्लिखानमगंव पितृपुत्राकनियाः
 सायादाववनिव देवलाकशकरी गोषशयव पितृपुत्राकशकरीया विवासः
 दितनसैगावसशव ध्विनमासाकस्नानमगंव ॥ नकार्यानीधययाः
 निपद्यमसर्वादिदाययगु गिलवादिक्छापयमनुयकासदाथगः ॥ सजवछा
 दमित्यकै गुणनिपितगसदा सर्वागावक्छा छेष कछामगावकाथक्रिया ॥
 सर्वकार्याकछी छेष यरुछा दविष्ठावटः ॥ ॥ भगतिमिर्गिन नसाकस्ना

५२

नमगंवधवे ॥ समसैधनकाव लिथीशक समसैगंव हामल लेख कछा स्वाः
 नमनुनशकयादाव छप्यागरीकलयाय थथयागसा पितृपुत्राकरी गोषः
 शयिव समसु कर्मक्रियास कछा छेष कछामदयकैयागसा याकाकर्मवार्थ वि
 ष्ठावत यरु कर्मस छुद कर्मस एमिदः ॥ नदार्थनापिदीचक गदः
 दानेककाययगु दादछीछुपमानक छुदयचुदहमिष छामवतक कछामः
 छुव कछाम धातथमिरी कछामलगाथक्रिया मनुसवलनेकछा ॥ ॥ भगः

निमिरिते कृष्णकायं स्फुटिताह्वये सतं वाम इमं सतं वामं वामं सतं वामं ४१
 क्रिमन्तलीलुपिमानं कायं शिखुथायससयाव कृष्णयावासं वज्रसहतायण
 कृष्णयासं ध्यासं अमितायतायणं कृष्णयादासं अक्रूयं तं कृष्णं वामं तां ४
 यणाव सैव यदेव ताया मनुन कृष्णकाय ॥ ॥ नर्वा निर्वै चरि क्रूष्णं
 क्षमं ध्याय कृष्णं चैव कृष्णं इह तां मां गुप्तं तां नि दत्ताय कृष्णं तां सुजं ४॥
 नता न्य ता वं पात्राणि क्षमं कर्म ध्याय स ४॥ सांतां तां वा ध्याय दीनां ४

४४

अराव पृष्ठा सतं ४॥ यवा स पृष्ठा सतं विदं ध्याय पृष्ठा यदि ॥ अना राव पृष्ठा
 च यदा ताया पृष्ठा स ४॥ ॥ निर्वै ध्याय कृष्णं ध्याय स क्षमं ध्याय कृष्णं ध्याय
 स चैव कृष्णं ध्याय स सदा इह तां ध्याय शिखुपि पिष्टु दानया दाया पन्था स्वर्णं ता
 कसं ध्याय निव ॥ सतां तां न सदि ताया दाव पृष्ठा सतं तां ध्याय दाया पन्था स्वर्णं वा
 स रूपाय पृष्ठा दाया दाया पृष्ठा स पृष्ठा सतं तां ध्याय विदं ध्याय उपदव नर
 व पिष्टु ध्याय तां अना सतं तां ताव मां तां ध्याय कृष्णं तां तां ४॥

पञ्चाङ्गि

उक्तं यथा श्रुयाव, श्रुवापसै, मा उध्या ननु वि॥ ॥ विष्णो गवदि नय नं, छुमदं
होवा कृतयदि, निजा सापिग प्रायानि, कलकुदनु जायतं, छुमदा न जासम सुनं ४
मृगकं उरुसि, सृगकं, तस्या नं उनि जासी कदा गैवा छि यनि द्रुति॥ ॥ वृक्षपः
पूषन, पिबुकर्म याय, दिनमस्य उचम, छुमदं कर्म ही वा श्रुला, थ (थ) श्रुता व, पिः
गत्र जाकन, छुमपठियव, ता उमरुनमा उध के धयव॥ दने, पिबुध या वा उरु, उ
रुस्य जाश्रुयव, मा वा वयव, थ (थ) श्रुता व, निजा साश्रुयाव, जी हा वनि व ४॥ ॥

धेन

पञ्चाङ्गि

उपूव आर्य सीध ह्यपूव यदुकि मानस ४॥ अणाय (छम धने, वे ह्यपिबुनियानय ४
ग, सीलानक उला छुमदं, धर्म धा उरुपूव यन॥ ॥ धनरुतमानन, दृषीथव
उगिसि य नासि य, वठै ठान्ना छायाय, आ सा छुमदं याया॥ डानैलि, दा रूपा उसा
न, कछा, ताय, लीख, आरुत, थगै न सीय क या दाव, सूर्य या ग अर्ध याय, पर्व ४
सयाव, दक्षिण सयाव, पा दा र्ध याय, उपूव क, पर्व सया, डरु उरु सयाव, थः
पणपति, सक उरु सीध पति, सा, पा दा र्ध याय, सूरु ह मिस, पा दा र्ध याय धन

काव, पञ्चा, दक्षिणा, वीरता, यथावत्, धर्मेति, पिबुधय, पलाहितयात४
 सेकलयाय, पञ्चायाय, नत्रकण्ठिनासयाय, काव, येनपञ्चायाय, पु४
 तापिबुधय, लानयाय, अष्टापूर्वकन, पञ्चायाय, पिबुदानयाय, अष्टसवा
 न, क्रवणथय, नासिय, हसुल्लभधनयाय४॥ ॥ वीरतायासर्वती, धर्मेति
 कप्रमध्यावहाजिच, सध्यातीथयमनीकार्या, छाषतीर्थमिदं यत्॥ कृष्णस
 नमर्घपायेच, पिबुसुनतथेवच, स्थापनापितापूर्व, यक्षगुपिबुनिदापथय

४१

विक्रमविनापिबु॥ काटिपिबुबाथारवत्॥ तस्मादासन४सवाष, विक्रमपि
 बृषदाययत्॥ अत्रवदक्षिणा नृत्वा, ततापिबुविसर्जयत्॥ अत्रवदक्षिणपिन४
 कार्या, अष्टावृद्धादि, छावने४॥ ॥ धनत्रयमानन, वीरतायादि, समस्त
 तीर्थतापनाव, थवइजानवाचकै, नासिय२सव्या, तीथतापयमसाव४
 थन, कृष्णसनयाय, अर्घपागुस, तयावपिबुयाय, लेखवीय, डानैलिकः
 थने, वव्यता, कृपा२या, अत्रापनिसा, पिबुदानयाय, विक्रमपिबुमदयः

के पिबुधयसा कति २ पिबुधयसा निरुल्लस्यत श्रुतयानिमित्तित न नतव
 ही विकपिबुधयसदयक सगेव ॥ धनेयी बुधयसायाय दधी नाविय वस्तुदिना
 लेकाय विय धनविसजनयाय ॥ अजमानयाय ॥ अहीर्वा दविय ॥ ॥
 वदिका यावदिह र मो स्थापया तागुपिरा अने अत्र धाया गुये कृता एवमपः
 छिमाहिमरी ॥ पिह विसजय एवमभा धाया अनया सह ॥ ॥ भवलिना
 धाम नुचयपाव पिबुहाजन रुलनपिगयाव लेखधायथयाव सया कः

४८

दाय अजमानन हात्रयपाव विसर्जन नभा धायय ॥ ॥ उं कतावसः
 वसलाथी सिद्धिदलान नभा वा बुधे वृद्धविषय पुन आयमनाय च ॥ ॥
 धाभा धायारवथ ॥ समस्त सलया गे अर्थन सिद्धि रूपवियाव ठा ॥ धावी
 कृत्रय ॥ रूपवियाव लीहा विष्का दून धवी पुन वीय विष्कायमा ॥
 २ प्रिय ॥ ॥ एताययती ॥ धनता ठा सयसिपु ॥ पिबुधवाहयतिर्य
 एतछादवयनिरस ॥ ॥ धनपिबुवायके दनसायगहिपास तीथस गव

धदपूष्यास स्वास यमहमदयानिसा ययाय॥ ॥थनपिष्टु (ठाच ठवय रवा
 उजादिने समसे उंरपनिस रशुतात्रयाय॥ ॥मध्याद्रवाथवानक दिना
 नपुदयगुय सवकाययपिष्टु निसाकापुनवर्जयग॥ ॥पिष्टुथययावा
 याथ (थ) असानिकेवाद्रिस वाद्रिन जाशुयसी विरायकयनका द्रियोस
 पदयस ह्मदकर्मयाय॥ जातिरुशकमगव॥ ॥उंतिपिष्टुपदाः
 न॥विधिया ययमान॥थ (थ) शलो॥ ॥थ (थ) नहुतुव॥ ॥

३२

पुमादा लमुयाताय असायातायम रूय॥ कपूयद्रयगुर्दयी गवीपिष्टुपदाप
 यग॥ ॥दने गुविचिनेययव थम (थ) थमे थव असायातकद्रयावमा
 यव थम (थ) थमी हामुपुदयद्रयाव शियव थपिं कयागशमुनी कपूय
 क्रयायगुर्दणीकूद्र पिष्टुथय थायशका गनद्रयसी गेव तीर्थसद्रयसी
 सद्रयसी गेव॥ ॥गुयिवरुद्रदणीदने द्वादणीदने क्रिय वेष्टायव
 दणीदने गुदामासन गुदगि॥ ॥वाकृदया निद्रुनगुयि क्रियानि

मनिङ्क नष्टुयि वेष्टु न नयात्रिमदाङ्क नष्टुयि षुडयात्रि नष्टुयि ॥
 निष्ममवससुत्यने सूर्या नोदय गेयदिदिनीष्टाष्टै सफर्यक सगेयकसिस्तः
 के ॥ रावठाक विपक्ति ॥ वसीसीलीष्टा वयमिय ॥ मासे ठाक सि गेया वरुवावदः
 द्रुक्कसुगके ॥ यदुसूर्ययाष्टासेच विवाहयहसहस्रय सयाष्टासे नदागार्थन
 कायासुगके गदा ॥ ॥ वसायासुचिनी याद्रुससिगसा सूर्यउदयसश
 वनीद्रासिगसा द्रुक्कयाष्टुचिनिधिन यावसायाव वा नके सिगसी थथी

मायाववयीथथी ॥ दने वक्रमिसा न नया मायावयाव सियूव वक्रद्रुवया ॥
 वक्रवदिनक्रुद्रुक्तिद्रुगोपुमाने वा नके ॥ दने यडुष्टासस सूर्ययासस विवा
 दास यहसायासयादावायस यासासीर्जवनायायोय गार्थसयाय देवासिस ॥
 यादावायसी थवायस मायावयसी सिगसी दूषनसमय ॥ ॥ पुपागा ॥
 निमनगाय नपुपागास निद्यानने सत्यासवालके यापिसय ॥ ॥ याविपिदि
 षागा ॥ पुवकावगयष्टुयविवाहो लवयहके ॥ ॥ वृद्धोसवायम् ॥ ॥ युयीसा

लगतसूतके॥ ॥यवतनकृतिदावववमिनयदवसियलखनयायावली
 खनइकायावसिमानकृतिदाववउमउनकयसंन्यासवुतकायवायकसिय
 थथाशुमुकनेडकईवादा॥वेदकुदाकर्मसवुतकर्मयायवासाखायविवार
 यसेहामकर्मसेयायानिसनसेथाययसेसितसीवृयसीइखनयायाममा
 ॥मृतेदेहानकयेश्वरसायलोकाकुवीधवागधेवयसाठानाधीमा
 नापिगोदेहानकायनेरागिनासूनेहानलगतसूनेसूनेइदिगासूनेचिउयामानि

येवधुचिस्थितिजागुके॥ ॥देहानकयससिकवाततायावयोयवाधवक
 नयातकायनेधुयीमामववृयीसठागुयीअथवामामववृसियकिङ्कण
 अष्टुयाहनेकेदेयाभायाथवकेवयासियवहनयाभायाक्काययाभायाति
 विथनेसितदावसयायइनधुचि॥ ॥मृतकेमृतकेवेवयसूनेयसू
 तकेकदायनयदिरुयागधुचिगसेवगकृष्णत॥ ॥हनेभायावृयद
 नेभायावृयवसियनेहनेसियवतकायनेधुयीयायमाय॥ ॥मृतने

निकाविभाकरुकर दक्षायसमदासुना॥

॥यत्रमष्टमैरुष्टा रगवन्तयाकैः॥

वृत्ताययाती दक्षवन्त पात्राति काधकनामगाथ मदायात्रातिक धर्क गाथ

नामश्रयाथ पात्राति कायाय समरुविभाकरनायाय अर्थन आह्लादयके प्रसन्नश

यसायधर्क रगवन्तयाकै मैरुष्टा वृत्ताययादाय॥ ॥रगवन्ताद॥ अर्द्धतः

यागक (येव यदुर्विष्टातिवारिकै सैव्यासिबु अथाटव्य दादशादसमाय प्रग॥

॥ निरीपाय धक्कुकर येरुविमर्चनमून स्नानदानैरुपैध्यानी यत्रैति॥

मैरु

रुक्तिगदिये॥

॥यत्नारगवन्तै अह्लादयकत्राथमस्यादीमन्त्र मवीस्याकैम॥

स्यादा अथाथमथमसिदावयादयाथथत्राप्रनास निय याययिरुथान्य॥

मायाव॥ दनैरुस्यासि वुक्कयायी थथैयनिष्ठादायापाय मायके निमनेदागाय

यत्नयमाय क्रिथं डयासनचोने पायमायके याका प्रक्षर निरुसना नयाय ये

रुपूकायायमाय निरीकाय निरीध्यान वृद्धियरुयययमाय थथैक्रिथंयाय

माय॥ ॥विरुदा नृपयगादाने कायुनीसयरोरुनी दहाव्यसरीदानेयक

साकामेया मरुष्टाया अह्ला

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

कुयाविम्यते॥ ॥ धमकयाथ सुवर्द्धनयाय निरुत्तमयाय चक्रेः
 तामस्तदा नयाय कृच्छुवृत्तनासयाय च (धननाय॥ ॥ तयधिनीयातकः
 ध्यायित्वा कृत्वा टकस्तथा शोचन्त दद्वय तमववृत्तमाचयेत्॥ ॥
 शुभनया टक (ध्वेव शुभम (धनकया टक (यलकया टक (ध्वेव दशवर्षसमाचयेत्
 ॥ ॥ पूजायाय कृत्वा शयनि शुभवकि ये लक कृति धर्षिष्ठ कृति स्यादायाः
 पाय निदा रयययित तयमाच उययाच विधि द्रुया द्रुयाथ ॥ ॥ कृतिः

यथाज्ञा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

यदनादिकेयथापूर्ववत्सुसुयर्थसमाययन्त॥ ॥ वेष्ट्यानातिस्नादायाया
 यथादागोप्राययिरुवत्सुदीयीथथी ॥ ॐ ह्रियन्तययय दानसनान४
 द्रुयायाथी वत्सुयर्थधयययमाय॥ ॥ ४५ दद्याटक ४५ अयि वट् वर्ष ४५
 समाययन्त वत्सुयर्थसनेयैव यथापूर्वययलन ॥ ४५ दद्याटक ४५ अयि येय
 वर्षसमाययन्त स्नानेदानेनयैवानी केयैवधमवय॥ ॥ ४५ दद्यातिः
 स्नादायाय वत्सुदागोप्राययिरु ॥ ४५ दिनास्नादायायाय दादागोप्राययिरु

ग/५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

भायदूयदानधर्मयाय ॥ ॐ ह्रियन्तययय वत्सुयर्थधययय ॥ ४५ दद्यातिः
 मिसाकन स्नादायाय वत्सुदागोविधि ववादायक्रियाडथी॥ ॥ ॐ ह्रियन्तवर्ध
 नाति वधयायक्रिकाविधि॥ ॥ ॐ वाधादाद ४५ वत्सुयथागवृत्तिनेह्रिय
 ॐ दानेनमिदानय योवधैववि ४५ वट ४५ रुकि ४५ गानी ४५ यविमार्चः
 नादिकै ४५ विष्णुसुयलिरु वत्सुयर्थसमाययन्त॥ ॥ ४५ वत्सुयर्थसायाः
 केयैवकयिथयायाययिरु निमनेदानोप्राययिरु योनेमाय थयाडययय

पञ्चाङ्ग
पञ्चम
पञ्चम
पञ्चम
पञ्चम

विधिः ७ थीं द्रुया २ द्रुया थीं ७० द्रुय नय प्रथम सादान विद्य रूमिदान विद्य साय
(६०) वक्र द्रुया वक्रय सा ६० नयि रोन न के रूय द्रुयायाय साया सखि शकन याय
नयाय थगे या दान याय नास द्रुया व ॥ सा सा याय थ सद वक्र (६०) कन दायानी ६० म
नवाय याय कान थ थीं ६० द्रुया के द्या प्रक या नी थ थीं किसिया के द्या प्रक या न नि
मने दाना याय यिरु थ थीं २ म व ता २ नी नी द्या प्रक या न थो प्रस रु सि नाना नी र
द्या प्रक या न र्द दाना याय यिरु वि ६० न य थ सद वक्र या थ थीं याय यिरु दः

३०

नी मय नी मा ६० नी (६०) कन य द्रुया दान प्रसी ६० म न य द्रुया दान प्रसी ४
यादि न कान न व न सी या व न कट न व न सी लेख न या प्रसी मिन य का श
प्रसी थ गुलिय काय न सि न सी र्द दाय व द्रुया याय यिरु दान द्रुया थगे म
वक्र य या व न म गो य तु लि थीं का थ नी या व न गो य गिव गु यिरु यिव ६० व द्रुया न
विय थ म यि द्रुया म सि न सा दो व न अदिक म माय ॥ ॥ ६० (६०) न काम गो ६०
ला र्द द्रुया कान म ने ७० द्रुया के य प्रथम वक्र ल व म वा गु यि ॥ ॥ त म ने र

याव मस्यै थवब्बु थया दायाय यथु या के रु प्रसी मनस्य या के रु प्रसी ॥ ४४
 जीयाता डी जीयाय डी जीयन्त डरुया डरुय ॥ ४५ लोकस रु प्रसी यय लो
 गस रु प्रसी वरु प्रव वि या थो इयै मजाव यो यै मजाव ॥ ४६ वरु प्रसी धुयी मजाव
 ॥ ॥ यदि युरुव थया को वुरुवाट समसु वेत्त यथिरुव रु वि या थै धा युकुपा ॥ ४७
 र्थय गे यन्ता ॥ ॥ वुरुय प्रुषय निरी समसु या नि या ता वस दि सा या यवी रु य
 यव थ रु य प्रुषया थवयुरुमा या का या याय थो वुरुथा थो थथि वरु या य याय

वा॥ ॥ क्रतुगृहद्विपद्यः । अमरुमिद्विपद्यित्थेवयः । तासिताकुषुनीः ।
 कायमनूनायविचित्रितं । अत्ताथंविहसार्थं । अत्रवधयत्त । थेवयायम
 द्विष्टाअन्त्याक्षानमवार्दतयाटके॥ वालवृद्धसुथाम्नीक्षी । आगाक्षविष्टः
 षट् । अर्द्धरागामुदातया । यमकासकृतेविवा॥ वालप्रमीयतेयावत् । दादनि
 वार्षिकेयदा । यावदाशानिवर्षान्ता । वृद्धाएवतिदीनता॥ ॥ थवनिमिरिः
 न । मवयातादावनविय । विद्यायमयासी । मवमीके । थववयनइरायय्या

दायायायन नयकादिदर्शनयाय थुलियायमक याययाग रू मिदान
 सुवर्धुदान सादान थननमकशयदा थननानिमिर्हिन सामवव थुय
 व धुनन इखवियुव दन वातकमायागा मच्चिनिव क थमच्चिनीव
 मिसाऊनयाशयसी यागाया थयनिस सिगसी ववयी यागाऊनायदावम
 माय सुनकैममाय यागादयनास वच्चिगाइखमाय किङ्गगाइयसा दाङ्ग
 गाइखनयोन यङ्गशयसा निङ्गगायोन ॥ दनीवायकधाय वयागायमानकि

३९

मनेदामङ्गाय वायकधाय काथधायववयगा ययदादगदाव काथधा
 य ययदामदगाय काथधायमनेव थनत्रिमनेदीया ययदानका मोवन
 अवकाधाय थयनिस अययाधीशयनास याययितयोनयययतनगाक
 ॥ ॥ ॐतिवधयात्रात्रिका ॥ ॥ खययीयवगान्दुनिमल्लादीनकात्
 कलकाथुयन्निजायया धयाहन सजवष्टदद्याटक सयवुक्कवधगुली म
 वावेष्टवधसमम ॥ सिद्धशिवधगुली दिसायातकमा ॐ नं थुकसायाकोया

॥ ॥ रुने जयस्त्रुनि कोकिल रुमत्र धुयनिरुकरमात्र कायायाच भा
लहु य दानकर्म यायाय ॥ ॥ उपासन या दाने किञ्चि न या कर्म
या दाने छुवि ॥ ॥ रुने वादत्र टिगिचि जा रुहेस वत्र हेस ॥ ॥
हेस वि वाद दा थगे जा रुन मा रुन भायकत्र सा सुयाय दून छुवि ॥ ३१
॥ ॥ वासु ध या ता दान वि य अर्थ सी व रा जा ष या द वयन न सा गुय
दे मन मे रा व ना या द ॥ ॥ समस्त या पे ना स य रु या व ॥ ॥ गिहि सा या या किका ॥

वृद्ध लपद पाफो सो एत्यक वर समाच व एत्यक लल वेश सा गु वृद्ध ल ना प्र या गु पू न ॥
एत्यक यद स पाफ आव के प्र समाच व गु आव के प्र समाच गु आव को सा र वे सि ली एत्यक ल
नहि पू न ॥ ॥ सु भा गत या च र्था या दा व या द कै ग था धा य सा मा दा या न च र्था स
इ वि दा व या द कै एत्यक च र्था स इ वि य द एत्यक च र्था स इ वि य दा व पू न र्वा च न था गतः
च र्था स इ म वि तो ॥ एत्यक च र्था ध य य पा द या द सा न आव क च र्था स इ वि य द आव क च
र्था स इ वि य दा व एत्यक च र्था स इ म तो थ सा स दी आव कि धा य ॥ ॥ ग ये व वा क सा

तु यस्मिन् न श्रुय यस्माच्च वेत्तु यत्तु यो गीर्यदाह रूदासै यतिता जयत्तु ॥ तथेव श्रुय ४ वे
 म्ये सुदेह्यसमाच वेत्तु यत्तु यो गीर्यदाह यात् स वक्ष्यत्यति तत्तु वेत्तु ॥ ॥ धर्था वाः
 म्म सजाति म्म श्रुय या क यात या के च य य पीत डा या के त श्रु तो ज न न य द मा या तो द य
 त थ थ श्र य ना स वा म्म सजात मख तो श्रु गी जा त श्र यो ॥ धर्था श्रुय ज्ञाति न वेध्या ३२
 क यात या के जा न तो ग या त दा त श्रु गी य जा त मख तो वि धा य न का य च्छु य द त ना स
 वेध्या जा त श्र यो ॥ धर्था वेध्या जा त न ष्ट दी व जा न तो ग या त दा त वेध्या जा त ख तो ष्ट

द जा त श्र यो ॥ धर्था ष्ट द जा ति न मे व जा ति व जा न तो ग या त दा त का य च्छु द त ना व
 मे व ता जा त श्र यो धर्था गु लिय य मा च के च्छु क र्म नै म जी यो धर्था हो म या दा नी जा य या दा नी
 जा क ही न श्र यो ॥ ॥ वृत्ति यति त या यो जिका ॥ ॥ अ का या स नै व रि श्र नी स फ च
 टि य ले च नै उ तो प वा स मे के न दि ने के न शु चि त वेत्तु ॥ आ र्थ नि र्य मा द ग र श्रा न पा नः
 मा च वेत्तु ॥ अ र श्रा त श्र ल वा पि च द व म शु चि त वेत्तु ॥ ॥ रि श्र य नि सी द्र स च पि
 दे य मा च द्र स च पि म ही सी त श्र तो ज न या त सा द्वि च्छि या उ त या च मा च ॥ धर्था आः

यथैवमपनिस्ते मते च तदुक्तं तस्मात्तथा नयातसा ब्रह्म गोपायचिरं यो न्यमा
 य॥ ॥ तथैव वाक्कृत्वा दीनी स्ववर्द्धन्यतस्तत्त्वैव वर्द्धन्यति ते वापि वर्षकेन
 भुवि रवेतु ययस्मा यमने वापि चैतच्छ्रुयादि लीघयतु इष्टकृत्वा तिमने चतुर्था मास
 नभुवि रवेतु॥ सने दसैसर्जनदावेन दधुनापि द० नवा स्नानवा ब्रूयदा नुके मा
 सके नविभुधागि॥ स्ववर्द्धन्यतस्तत्त्वैव वर्द्धन्यति ते वापि वर्षकेन
 साहेनभुवि रवेतु॥ ॥ धर्मा वाक्कृत्वा ज्ञातिन मेव ज्ञातियाके तदुक्तं तथा नयातसा न

३२

वाक्कृत्वा ज्ञातमखतो मेव जातज्ञो धर्मेयाकेन दाक्षि गोपायचिरं माय॥ मेव यामि थियाः
 न चैतयाके पाणने कृत्वा तियाके यसेनयादा न स्वया गोपायचिरं माय॥ दने कृत्वा ति
 यनिके मते दाता वन यासा थथैसर्जनदावेन वेयने दधुयाकेने दीन ज्ञातियाके न
 यनास यच्चि गोपायचिरं माय दने दने धन ज्ञातियाके न मेव ज्ञातियाके दयसी अतश्च
 तदुक्तं तथा नयातसा दीन ज्ञातिमखतसी मते न दीन ज्ञातियाके लेख गो न नाव वा यच्चि गोपा
 यचिरं माय॥ ॥ शक्तिं वीरुदधुविपु रि याते नभुवि रवेतु तथैव शक्तिया चैव ब्रूडाः

पापजो
नयेमनेनेनययगुविनयोन
दायादादायाचमकाया

मृगदनेपिवा॥वर्षहीनासजातीनी॥सुहृत्सकलादपि॥॥वाक्मन्त्रागतन॥यज
पूजयुसेनयाय॥श्रुतियनवेधमृगयुसेनयाय॥वेधजातनभूदुपसेनयातयातदाव॥भूद
जातिन॥हीनजातिपुसेनयातदाव॥कसवायाकृगोपायचिरुमाय॥॥अह्नानायः
दिवाचुकै॥उगाथावनभुधाति॥ह्नानपूर्वयदाचुकै॥पूनालोचनकाययत्॥हीनवर्ष
दहिरावेलातिगेकोधविगुहे॥तत्कृतंयगयाशय॥मित्रीरुंमभुचिरवेत्॥सकयागं
भुधातेकेमकषयविगुहे॥कमवगायकोये॥हिरकर्मनदाययत्॥॥अह्ना

नन॥मसूसीनयसा॥उतधर्मयादान॥भुत्रियायमजित॥धम॥थधर्मलोभी॥खरवे॥कृतयमद
यके॥तशअतशयातसा॥पूनर्वाचधर्मकर्मयादाने॥भूवीयायमजीव॥हने॥हीनजातका
न॥तमन॥लोचन॥दाय॥द्यायुव॥थ॥थशयनास॥सवायाकृनभुत्रि॥हनेहीनजातिमाः
न॥लोचन॥यसाकायसा॥कसवायाकृगोपायचिरुमाय॥व्मयखाय॥साखाय॥सनेहतावे
नयादाथायस॥भुत्रियायमूमाय॥॥सूतकेमृगकेवापि॥यमादादगिरिशवे॥जीव
उगायवासेन॥ह्नानगवभुधाति॥शिरु॥व्ययकठहंरुकै॥आमनेयकतथापून॥मृग

वाजाजी
 मंत्रावाचनेन
 भक्तभक्त्या
 भक्तभक्त्या
 भक्तभक्त्या

कंसकवापि पंचपातेन मधुधिति ॥ उर्ववाक्कादीनीति पातेन मधुधिति ॥ ॥
 मायावृत्तेऽश्वेदुयानमायाधियुथथाश्वदावड्यासनयोनेयचननमधुधि
 याय ॥ रुनीति श्रयनिस्ती ॥ अमनेकयाकेसिकथायवृवथायस नयसा दायाषूद्रनधु
 विधथी ॥ वाक्कादीनामिया सयानमधुधिश्रयदा ॥ ॥ वृत्तिरुशारुनमधुधितिनिदे ॥ ॥
 मध्यासवसुयाता ॥ सुस्तिनेशीयाम्द्रुषिते ॥ यमादायिवतेयमु ॥ रिपातेन मधुधिति ॥
 तावत्तावच्छ्रययैपीतकानविवर्जिते ॥ स्नातापवासायनदिनमेकेन मधुधिति ॥ ॥

३३

शिद्रयनिस्ती ॥ शिरीतिजातयनिस्ती ॥ कृतयमदयके ॥ थथादाथायास ॥ इद्रतयावतामिद ॥ असा
 निके ॥ इद्रतयाव ॥ लेखतयाव ॥ तयीवशयो ॥ थथाश्वनावद्रिचि नयाक ॥ मुधिवर्मायाय
 माय ॥ ॥ यलाभुदभकेकभ ॥ तयुमाद्यदिरुशति ॥ डपवासायिताहला सफपातेन ॥
 धुधिति ॥ जलजानुल्लजानुखजानु ॥ मीसराशुनि ॥ अदकानु ॥ ॥ थययुवमूजागियः
 निस्ती ॥ दभकेकनेयमतेद ॥ गथाधायसा ॥ मद्रके ॥ युयता ॥ खयपद्रुपीयता ॥ द्योप ॥ दभ
 कन ॥ ययीकवाय ॥ तागी ॥ व्याययनेक ॥ डपयार्क ॥ या ॥ दा ॥ खज ॥ नयमतेद ॥ अदकययाः

हृद्याय नमः लेपमिवाधितं ॥ तीर्थं तिममनीयं देहदानेन मय्युक्तं तथैव च मिथ्या ॥
 नो ह्यगच्छेत्तियागमागमं वृत्ताय वासतीर्थं सर्वनाथप्रियमयुक्तं ॥ ॥ आचार्य
 यामामं ससुप्रमामं पासाथं थयामामं थदमामं मामयामामं मिथयामि तताकं
 दे तपश्चिनीपनि स्नाययामाता थदकं सप्रनवयादयो दं श्रीयाजनया के देः
 ततायानि युतिवृत्ता थर्थे थर्थे पकं नमनया दायय थर्थे कुरुपूतल्य क धय थः
 थिं कृपापिषूया कुरुवृत्तया दाने पावत्यागया दाने पापमूत्रकं मजीव तीर्थजा

३१

गान्धदाने थदमजीय मिसद्रवादाने च कर्मया दाने पापमात्रकं मजीव गं थद्ययसा
 वजलेपसं लेखमकाथं मदापातकि धय थका ॥ ॥ वृत्तिवृत्तल्यकनिर्देशा ॥
 निवृत्ते आर्यसंघस्य ध्यायर्थं नमु ध्याति दुष्कलातामहाचर्या पासायाम नमु ध्याति
 उकादायु ध्यातेति ॥ ॥ अमं वप्रति प्रागुक्ते वलके वडा जे व युचिस्मात्तु तमुत्तकं ॥
 ॥ तव धदपूष सदा शुभशया वे चोद मदाया नवय्या सचोद पूनर्वाचजः
 लकायमसायक थर्थे कुरुपूष सतकम तकमसाय ध्यानमात्र नमुचि ॥ थनीयौ ड

पाठाश्री

र्कया तावय र्था या दावयो समस्त कर्मकर्त्ता स यो दत्तथा न तथी गत्था वय र्ज्ज्थी व न द
 द क्रया या नम मागु न भुवि मृग कस्तक मूमा य तव धद रिश्रय र्था धय य पाव यो दः
 क्रया सय मोय उभव कय र्था स यो द क्रया रि जागु व भुवि श्रय ॥ वल क जाति या निष
 द्ध न भुवि सिग सीध गे वृष सीध गे ॥ ॥ वृगी नीम क पि धु अ रिश्र नी य भुविः
 र्क सीध थ क य थ क दश द्वा दश य श्रय मास के वय थ क र्मा ॥ वा क्र व श्रि या वै ध्य रः
 दाना अ भुवि त वेग स ल गायि त वे धूनी शौ च क र्मा वि धि य गे ॥ य व न च त था व र्मे तीः

[illegible]

ति॥ ॥ ददा किं जा नि नि या का य, आ य या आ य, आ य या रा य गो, व स य, जी या
 ज न का य, ला य, वै धू ज न, थ गे सि त दा व, स या य दू न धु यि॥ ॥ यि धु दा न अ यः
 ठे न, ता र्था वा आ र के न वा, पू रा रा वे धू क रू वा स, ग म रा स रु वी ध वा दि रि॥ ॥ व व
 या ता यि धु थ य, का य मा या नी, क या त नी गे व, पू य य ता ना म नी॥ द दा नी, कि जा नी गे वः ३९
 का य मा या म द त सा, स ग म रु य नि र्ही नी गे व॥ ॥ समा धि म लु ४ ला य अ न क र्था ल द
 य न॥ अ ज स म त के वा यि, लो का या य वि या य वि व जि री, स्ना नी दा नी य वा स अ, स्ना धा यः

उ त म ग ले, न कू वी त य दा जा गे, म ता नी य दि स त के, स त के म त के वा यि, स्ना न दा न लु का य
 य त्, उ गो य वा स स्ना धा य वि वा ह लु न का य य त्॥ ० ॥ स धि नी, र्थ ग धा न त ल य क क
 म लु स्ना न या क क या, म त क श य सी, स त क श य सी, नि र्थ क र्म गो य गे म द, मि सा ज नः
 या अ ज स या द श य द, स्ना न मा रु नी ग क, रु नी मा या व यो, मा वा सि य द, रु नी सि क था य स व
 य द, उ त ड य वा र्ही नी यो दा नी ग क, वि वा हा क र्म श क म गे व॥ ॥ वृ ति धु यि नि दे श
 वि वि ४॥ ॥ अ थ ग ४ स य व क्ता मि, उ त या या जि का ल य व, मा य नी स र्व या पा नी, स र्व कि

स्त्रिय नासते ॥ ॥ धर्मलिङ्गं न द्वाय समस्तपापया पापयायखा समस्तपापनासयाय
 निमिरित्तं पापयिरुको न्यायपयिपातखद्वाय ॥ ॥ यथमदिवसमात्रये अष्टौ मय
 वासन ॥ दिगी यदि वसमात्रये धर्मं शुद्धमदिकै रतीये दिवसमात्रिये जयस्तु यथा
 ० ते यथ यदि वसमात्रिये शुद्धा नापसेवने ॥ ॥ द्वापाकृद् अष्टमिबुगथी ४
 यययय निद्रकृद् धर्मकथा दं न सद्रकृद् रुयस्तु याया यद्रकृद् शुद्ध ४
 धान रावनायादं यान ॥ ॥ यथमदितियोषधे दिगीयय अयायिकै सद्र ४

१०

कृद् ययययय यद्रकृद् निद्राद्रकृद् साखाय व्वायखाय येयगः
 वासाधनयाय येयगवागान् ॥ ॥ येयमेयाद्र अर्थसेवादिगानने यव्वात्ता
 यदीकृयात् पापगान् कृष्टिर्वेत् खतीसमात्रयेलिह्ये शुद्धात्तायकिनेद्रिय
 ॥ ॥ द्वाद्रकृद् ययपायमस्वन येयथवा यदयकाव अयाययनिद्रय ४
 यादाव कर्मक्रियायाय वतधर्मदानकै शुद्धात्तायाव यान् वृन्दियन
 ययय ॥ ॥ यनयिपायनयाय पायनधूदायी शुष्टिरुयव ॥ ॥

(मममूरी) (मममय) श्राप्य दधिस्थिगविहवाती (था) दकसमायुक् (ययग) वीयमिति
सूती (नियानिकवि) वंरुवी वा (अ) नन (थे) वय (क्र) गिय (म) रुक धार्य (वे) ध्यारुः
रुधमं वय (मि) धूडयावको कय (अ) न्वा लु न लरुग (य) थारि का सूयायाने ४
नय के वपन नीर वेतु ॥ ॥ ययग वधाय पयार्थ (थ) (थ) सायायो सायायि स ११
या धयी (सा) या इइ (सा) या धेय (गार्थ) लीख न रीयूक या दाव (मि) सुय याय (अ) वक
यह के (म) दाया न (उ) अय र्थ शर्क स न (ययग) वध स वयय (क्र) गिय का गिया (क)

याय सहाय (वे) स का गिया (ययग) न हाय (मि) साक न यात (अ) ड यात (अ) को व्य (ग)
(था) धा (य) सारि रुय नि सी म ययान स वयय म गे व (थी) (अ) ड का ति न ययग वध स वः
ययय सा नय के स व निव ॥ ॥ (मममूरी) (धे) व वडी (व) य द ह विरुनी (मममय)
वज गे न (श्रा) प्य सा ध्व ता र्थ (द) धि य व न (ग) था क र्म या रा स व डी (वा) व्य ता अ र्क ना
थी (स) क य म स्व प वि या रु ग (अ) ड वा यू ध्या (अ) न य (अ) ली म य रा य तो (सा) य य रु ड
रु मो ॥ ॥ (अ) र्क रा य त था ग त मू रा य य (य) य वे या य न या य (अ) मि ता र गे ४

योऽष्टमपनिष्ठा मते च तत्र अत्र न स्वा नपा नया तसा बू दा गो या य चि र्क यो न्य मा
 य ॥ ॥ तथेव वाक्क लादी नौ स्व व शू द न्य तत्र (६) स्व व शू त्य गि ते वा पि व र्ष के नः
 भु चि रवे त् य य स्ता य म न वा पि चै त श्च या दि ली च य त् ३४ क ला ति ग म न च गु या मा स
 न भु चि रवे त् ॥ स ने द से स र्ज दा वे न द (७) ना पि द (०) न वा सी न वा शू र्य दा रु के मा
 स के न वि भु चि ति ॥ स्व व शू द न्य क ला या च अ त्र त्र त्र त्र त्र न दी न व शू ज ले पी ते माः
 सा ह न भु चि रवे त् ॥ ॥ ध र्था वा क्क ला ज ति न मे व ज ति या के त्र त्र त्र त्र न या त ना न

वाच सजातमख तो मवजातज्ञ को धतेयाके न दाचि तो पायविरुमाय ॥ मवयामि थियाः
 न वेरायाके पागाने कजातियाके पुसेगयादा न स्वयातो पायविरुमाय ॥ रुने कजातिः
 पतिरुके मते दातावन यासा थ थसे स र्जतावन वेयने दधुयाके ने दीनजातियाके न
 यनास यचि तो पायविरुमाय रुने रुने थवजातियाके न मवजातियाके जयसी अरु
 तज्ञ सयात दाव दीनजातिमख तसी मते व दीनजातियाके लेख तो न नाव वायचि तो पा
 यविरुमाय ॥ ॥ शरि सीगुद सविप रि या जे सधुविरुवेत त थेवशरियावे ॥ ५५ डाः

ध। (६) वि। (६) ध। (६) वि। (६) ध। (६) । सम न न । चि वि चि वि २ शुं रु स ख म हा य अ हूं हूं
 हूं रुट् रुट् रुट् रुट् सा दा ॥ ॥ थ ते ता म नु य य वा व । निय च्छु धा य (६) ध न या
 य ॥ सम स्र या ते । या व ना स्र य ॥ ॥ ॐ नि सर्व त था गत दा द स सा द मु या या
 नि का वि न य स्र या दू त । धा म ने दु मू ख क म ल वि नि र्ग त । या य वि मा च ना ना म । ४
 नि द्द ६ १ ४ ० ट ३ स मा फ ॥ ॥ य धी मा धी दे गु पु रा वा दे गु ने वी त था गत दे व ४
 रु धी य या नि ॥ ॥ या ध उ र्व वा दि म हा शु व न ॥ ॥ DH 321